लिए विषय के भावन के साथ-साथ विषय को प्रस्तुत करने की कला-सामर्थ्य भी आवश्यक है। उसमें भावयित्री और कारयित्री प्रतिभा दोनों होनी चाहिए।

प्लेटो ने कुछ मूल सत्यों की ओर इंगित अवश्य किया है। उसने कवि के जिस आत्म-विस्मरण का बात कही है उसका अर्थ यदि यह मान लिया जाय कि कवि उस समय काव्य के वर्ण्य से पूर्ण तादात्म्य स्थापित कर लेता है, उसमें पूर्णतः लीन हो जाता है तो इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती। प्रतिभा के सम्बन्ध में भी उसके मत को यदि इस अर्थ में लिया जाय कि कविता लिखने की शक्ति प्रत्येक व्यक्ति में न होकर केवल उन्हीं में होती है जिन पर ईश्वर की कृपा हो तब यह बात भी स्वीकार की जा सकती है। काव्य-प्रतिभा ईश्वर-प्रदत्त, नैसर्गिक गुण है जिसे अर्जित नहीं किया जा सकता। "poets are born not made."

2. // काव्य-सृजन का दैवी प्रेरणा सिद्धान्त :-

प्लेटो का मत है कि काव्य-सृजन की प्रेरणा कवि को दैवी शक्ति (muse) से प्राप्त होती है। जब कवि का मन दैवी शक्तियों (muses) द्वारा अभिभूत होता है तभी वह काव्य-रचना में प्रवृत्त होता है। उस समय वह आविष्ट और परिष्कृत-विवेश विवेक की मन:स्थिति में होता है। काव्य-रचना को पीछे कलात्मक प्रेरणा न होकर दैवी प्रेरणा होती है, काव्य-रचना के समय कवि का सहज मानव-सुलभ विवेक और बोध-वृत्ति लुप्त हो जाते हैं; वह दैवी शक्तियों से वाह्य हो जाता है, वह एक आरोपित व्यक्तित्व धारण कर लेता है।

काव्य को दैवी प्रेरणा का प्रतिफल मानने के कारण ही प्लेटो की मान्यता है कि विषय की अभिज्ञता-अनभिज्ञता का दायित्व कवि का नहीं है और न काव्य-रचना के लिए कलात्मक व्यायाम ही अपेक्षित है। काव्य प्रतिभा को वह दैवी शक्ति की अन्त:स्फुरणा कहता है। काव्य-देवियाँ कवि को ही नहीं, चारण और अभिनेता तथा प्रेक्षक-श्रोता को भी अनुप्राणित करती हैं।

मनोविज्ञान यह बताता है कि आत्म-रक्षा के बाद आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति मानव की दूसरी महत्वपूर्ण मूल वृत्ति है। अत: कवि अपनी भावना, अनुभूति और विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए काव्य-रचना करता है। वह साहित्य-रचना में प्रवृत्त होता है अपने नित्यप्रति के भावहीन अनुभवों, संवेदनाओं और सहज व्यक्तित्व का प्रकाशन करने के लिए। अनेक घटनाओं का सद्य: प्रभाव उसे काव्य-रचना की प्रेरणा देता है। क्रौंच-वध की घटना ने वाल्मीकि को अनुष्टुप छन्द लिखने की प्रेरणा दी तो गांधी-हत्या की समसामयिक घटना ने अनेक भारतीय कवियों को कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया।

प्रगीत-काव्य के प्रणयन में कवि दैवी प्रेरणा से नहीं अपितु अपने भाव-संवेदनों को अभिव्यक्ति देने के उद्देश्य से प्रवृत्त होता है। इन भाव-संवेदनों का स्वरूप नितान्त वैयक्तिक, अन्तरंग और आत्मीय होता है।

अत: स्पष्ट है कि काव्य-रचना के